मौर्य साम्राज्य की स्थापना (323 ई0पू0–185 ई0पू0) एक दृष्टि में

* श्वेता सिंह

चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरु विष्णुगुप्त अथवा चाणक्य की सहायता से नंद वंश के अन्तिम शासक घनानंद को हराकर मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। चन्द्रगुप्त मौर्य की जाति के विषय में मतैक्य नहीं है। ब्राह्मण साहित्य इन्हें शूद्र तथा बौद्ध एवं जैन ग्रंथ इन्हें क्षत्रिय कुल में उत्पन्न बताते हैं। विशाखदत्त कृत 'मुद्राराक्षस' में इनके लिए वृषल शब्द का प्रयोग किया गया है। वृषल शब्द का आशय निम्न कुल से हे। रोमिला थापर ने चन्द्रगुप्त मौर्य को वैश्य जाति का माना। यूनानी स्रोत के अनुसार वह साधारण कुल में पैदा हुआ था। स्पूनर महोदय मौर्यों को पारसिक मानते हैं। कार्टिअस, डिओडोरस, प्लूटार्क तथा जस्टिन भी मौर्यों को निम्न जाति का मानते हैं। चन्द्रगुप्त मौर्य की चन्द्रगुप्त संज्ञा का प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य रुद्रदामन प्रथम के जूनागढ़ अभिलेख से मिलता है।

मगध के राजसिंहासन पर बैठकर चन्द्रगुप्त ने एक ऐसे साम्राज्य की नींव डाली जो सम्पूर्ण भारत में फैला था। चन्द्रगुप्त के विषय में जस्टिन का कथन है कि उसने (चन्द्रगुप्त ने) छः लाख की सेना लेकर सम्पूर्ण भारत को रौंद डाला और उस पर अपना अधिकार कर लिया। चन्द्रगुप्त मौर्य ने उत्तर–पश्चिमी भारत को सिकन्दर के उत्तराधिकारियों से मुक्त करके, नंदों का उन्मूलन कर, सेल्युकस को पराजित करके संधि के लिए विवश कर, जिस साम्राज्य की स्थापना की उसकी सीमायें उत्तर–पश्चिम में ईरान की सीमा से लेकर दक्षिण में वर्तमान उत्तरी कर्नाटक एवं पूर्व में मगध से लेकर पश्चिम में सोपारा तथा सुराष्ट्र तक फैली हुई थीं। महावंश की टीका में उसे सकल जम्बूद्वीप का शासक कहा गया हैं। रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से पता चलता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य विस्तार पश्चिमी भारत में

* शोध छात्रा, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

भी था। इसी में चन्द्रगुप्त के गवर्नर पुष्यगुप्त का वर्णन है जिसने सुदर्शन झील का निर्माण कराया था। महाराष्ट्र के थाने जिले में सोपारा से प्राप्त अशोक के शिलालेख से पता चलता है कि चन्द्रगुप्त ने सौराष्ट्र की सीमाओं से परे पश्चिमी भारत की अपनी विजय को कोंकण तक विस्तार किया था।

305 ई0 पू0 में यूनानी शासक सेल्युकस एवं चन्द्रगुप्त के मध्य युद्ध हुआ, जिसमें सम्भवतः सेल्युकस पराजित हुआ। दोनों के बीच सम्पन्न हुई संधि की शर्तें इस प्रकार थीं– सेल्युकस ने चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ अपनी पुत्री हेलना के विवाह में दहेज के रूप में एरिया, अराकोसिया, जेड्रोसिया एवं पेरीपेमिसदाई के क्षेत्रों को दिया। प्लूटार्क के अनुसार चन्द्रगुप्त ने सेल्युकस को 500 हाथी उपहार में दिये। सेल्युकस ने अपने एक राजदूत 'मेगस्थनीज' को चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा। संभवतः इस संधि के परिणामस्वरूप ही हिन्दुकुश मौर्य साम्राज्य और सेल्यूकस के राज्य के बीच की सीमा बन गया।

चन्द्रगुप्त मौर्य की दक्षिण भारत की विजय के विषय में जानकारी तमिल ग्रंथ 'अहनानूर' और 'मुरनानूर' तथा अशोक के अभिलेखों से मिलती है। अशोक ने अपने दूसरे और तेरहवें शिलालेखों में अपने साम्राज्य की सीमाओं तथा चोलों, पाण्डयों, सतिय–पुत्रों तथा केरलपुत्रों जैसे सीमावर्ती राज्यों का उल्लेख किया है। बंगाल पर चन्द्रगुप्त की विजय महास्थान अभिलेख से पता चलता है। तिब्बती इतिहासकार तारानाथ तथा स्मिथ का मानना है कि दक्षिण भारत को मौर्य साम्राज्य में बिन्दुसार के समय में मिलाया गया। यूनानी इतिहासकार चन्द्रगुप्त मौर्य को दक्षिण की विजय का श्रेय देते हैं।

अपने जीवन के अन्तिम चरण में चन्द्रगुप्त मौर्य ने जैन साधु भद्रबाहु से जैन धर्म की दीक्षा लेकर श्रवणवेलगोला (मैसूर, कर्नाटक) में स्थित चन्द्रगिरि पहाड़ी पर करीब 298 ई0 पू0 में उपवास के द्वारा शरीर त्याग दिया। भद्रबाहु पुष्याश्रवक कथाकोष तथाराजा बलि कथा से चन्द्रगुप्त मौर्य के जैन धर्मी होने तथा श्रवणवेलगोला जाने की पुष्टि होती है। यहाँ पर

चन्द्रगुप्त मौर्य ने चन्द्रगुप्त बस्ती का निर्माण करवाया। चन्द्रगुप्त मौर्य एक कुशल योद्धा, सेनानायक तथा महानविजेता के साथ–साथ एक योग्य शासक भी था। विशाल साम्राज्य पर शासन करने वाला वह भारत का प्रथम शासक था। उसने एक ऐसी शासन–व्यवस्था स्थापित की जिसे परवर्ती भारतीय शासकों ने भी अपनाया। इस शासन की मुख्य विशेषता सत्ता का अत्यधिक विकेन्द्रीकरण, विकसित अधिकारी तन्त्र, उचित न्याय व्यवस्था, नगर शासन, कृषि, शिल्प उद्योग, संचार, व्यापार एवं वाणिज्य की वृद्धि के लिए राज्य द्वारा अनेक कारगर उपाय आदि थे। चन्द्रगुप्त की शासन व्यवस्था का चरम लक्ष्य अर्थशास्त्र के निम्नलिखित उद्धरण से व्यक्त होता है प्रजा के सुख में ही राजा का सुख है और प्रजा की भलाई मे उसकी भलाई। राजा को जो अच्छा लगे वह हितकर नहीं है वरन् हितकर वह है जो प्रजा को अच्छा लगे। चन्द्रगुप्त ने अपने विशाल साम्राज्य पर राजधानी पाटलिपुत्र से शासन किया जिसे यूनानी और लैटिन लेखकों ने पालिबोथ्रा, पालिबोत्रा एवं पालिमबोथा नामों से उल्लिखित किया है।

चन्द्रगुप्त मौर्य का पुत्र बिन्दुसार मौर्य साम्राज्य का अगला उत्तराधिकारी बना, इसे यूनानी लेखक अमित्रोचेड्स कहते थे। स्ट्रैबो ने बिन्दुसार को अलिट्रोकेड्स कहा 'वायुपुराण' में इसे मद्रसार तथा जैनग्रंथों में सिंहसेन कहा गया है। फ्लीट ने बिन्दुसार को अमित्रघात नाम का अर्थ शत्रुओं का वध करने वाला बताया। जैन परम्परा में बिन्दुसार की माता का नाम दुर्धरा मिलता है।

बिन्दुसार ने दक्षिण विजय की थी या नहीं, यह स्पष्ट नहीं है किन्तु उसने अपने पिता द्वारा जीते गये क्षेत्रों को पूर्ण रूप से अक्षुण्ण रखा। 'दिव्यावदान' में बिन्दुसार के समय में तक्षशिला में हुए दो विद्रोहों का वर्णन है। इन विद्रोहों को दबाने के लिए बिन्दुसार ने पहले अपने पुत्र अशोक फिर सुसीम को भेजा। स्ट्रेबो के अनुसार यूनानी शासक एण्टियोकस ने बिन्दुसार के दरबार में डाइमेकस नाम के राजदूत को भेजा। डाइमेकस को मेगस्थनीज का उत्तराधिकारी भी माना जाता है। एथीनिअस नाम के एक

यूनानी लेखक के उल्लेख से यह स्पष्ट होता है कि बिन्दुसार ने ऐण्टियोकस से मदिरा, सूखे अंजीर एवं एक दार्शनिक भेजने की प्रार्थना की थी जिसमें से उसने प्रथम दो स्वीकार कर ली थी किन्तु दार्शनिक भेजने से इन्कार कर दिया था। प्लिनी का कथन है कि मिस्र के राजा फिलाडेल्फस (टालमी द्वितीय) ने पाटिलपुत्र में डियानीसिअस नाम के एक राजदूत को भेजा था। प्रशासन के क्षेत्र में बिन्दुसार ने अपने पिता की भाँति ही शासन किया। उसने साम्राज्य को प्रान्तों में विभाजित कर प्रत्येक प्रान्त में कुमार या उपराजा नियुक्त किया। प्रशासनिक कार्यों के लिए महामात्रों की नियुक्तियाँ की। 'दिव्यावदान' के अनुसार अवन्ति राष्ट्र का उपराजा अशोक था। बिन्दुसार की सभा में 500 सदस्यों वाली एक मंत्री परिषद् थी जिसका प्रधान खल्लटक था।

बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था। उसकी राजसभा में आजीवक परिव्राजक निवास करता था। बौद्ध विद्वान तारानाथ ने बिन्दुसार को 16 राज्यों का विजेता बताया। 'आर्यमंजुश्रीमूलकल्प' के अनुसार–बिन्दुसार के राज्य का संचालन चाणक्य करता था। चाणक्य ने तीन मौर्य राजाओं के राज्य शासन का संचालन किया था। चाणक्य की मृत्यु के बाद राधागुप्त उसका उत्तराधिकारी बना।

अशोक (273–232 ई0 पू0) बिन्दुसार की मृत्यु के उपरान्त अशोक विशाल मौर्य साम्राज्य की गद्दी पर बैठा। अशोक के जीवन की प्रारम्भिक जानकारी हमें बौद्ध साक्ष्यों जैसे दिव्यावदान तथा सिंहली ग्रंथों से मिलती है। दिव्यावदान में अशोक की माता का नाम सुभद्रागी मिलता है। सिंहली परम्पराओं के अनुसार अशोक के पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा विदिशा के एक श्रेष्ठी की पुत्री देवी से उत्पन्न हुए थे। उसके अभिलेख में उसकी एकमात्र पत्नी 'कारुवाकी' का उल्लेख मिलता है, जो तीवर की माता थी। सिंहली अनुश्रुति से ही यह ज्ञात होता है कि अशोक ने अपने 99 भाइयों की हत्या की। करीब चार वर्ष के सत्ता–संघर्ष के बाद अशोक का विधिवत् राज्याभिषेक 269 ई0पू0 में हुआ, वैसे तो अशोक 273 ई0पू0 में ही मगध के

राजसिंहासन पर बैठ चुका था। राज्याभिषेक से संबंधित लघु शिलालेख में अशोक ने स्वयं को बुद्धशाक्य कहा है।

अभिलेखों में अशोक को देवानामपिय, देवानामपियदशि के सम्बोधन से सम्बोधित किया गया है। सर्वप्रथम मास्की अभिलेख में अशोक नाम मिलता है। गुर्जरा लेख में भी इसका नाम अशोक मिलता है। पुराणों में भी अशोक के नाम का उल्लेख मिलता है। रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक दोनों के नाम मिलते हैं। भाब्रू लेख में अशोक अपने को मगध का राजा कहता है। बौद्ध ग्रंथों के विवरण के अनुसार अशोक को तक्षशिला एवं अवन्ती प्रान्तों का शासक नियुक्त किया गया था। अपने राज्याभिषेक के सातवें वर्ष में अशोक ने कश्मीर एवं खोतान क्षेत्रों के अनेक भागों को विजित कर मौर्य साम्राज्य में मिलाया। कल्हण की राजतरंगिणी के अनुसार अशोक ने कश्मीर में बितस्ता नदी के किनारे श्रीनगर नामक नगर की स्थापना की।

अशोक ने अपने अभिषेक के आठवें वर्ष (लगभग 261 ई0 पू0) में कंलिंग पर आक्रमण किया। हाथीगुफा अभिलेख से ज्ञात होता है कि सम्भवतः कलिंग पर नंदराज नाम का कोई राजा शासन करता था। उस समय कलिंग की राजधानी तोसली थी। कलिंग युद्ध तथा उसके परिणामों के विषय में अशोक के तेरहवें अभिलेख में विस्तृत वर्णन मिलता है। कलिंग युद्ध के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं–

1. अशोक ने अपनी साम्राज्यवादी एवं विस्तारवादी नीति के अन्तर्गत स्वतंत्र कलिंग राज्य को जीता।
2. प्लिनी के अनुसार अशोक ने कलिंग को व्यापार–व्यवसाय की दृष्टि से महत्वपूर्ण समझकर इस पर आक्रमण किया। समुद्र तट के नजदीक होने के कारण इसकी महत्ता विदेशी व्यापार के लिए अधिक थी।
3. तारानाथ के कथनानुसार समुद्री लुटेरे के रूप में चर्चित नागा जाति के लोगों ने, जो कलिंग में निवास करते थे, अशोक की

मणिमुक्ताओं को चुरा लिया था। इसे ही पुनः वापस लेने के लिए अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया। कौटिल्य के अनुसार कलिंग हाथियों के लिए प्रसिद्ध था। इन्हीं हाथियों को प्राप्त करने के लिए अशोक ने आक्रमण किया। अशोक के तेरहवें शिलालेख से स्पष्ट होता है कि युद्ध में करीब एक लाख लोग मारे गये और करीब डेढ़ लाख युद्ध बन्दी बना लिये गये। इस युद्ध में हुए भीषण नरसंहार से अशोक का मन द्रवित हो गया और उसने सदा के लिए युद्ध को त्यागने की घोषणा की। कलिंग मगध साम्राज्य का एक प्रान्त बना लिया गया था राजकुल का राजकुमार वहाँ का उपराजा (वायसराय) नियुक्त कर दिया गया। कलिंग में दो अधीनस्थ प्रशासनिक केन्द्र स्थापित किए गए –

(1) उत्तरी केन्द्र (राजधानी तोसली)

(2) दक्षिणी केन्द्र (राजधानी जौगढ़)

कलिंग की प्रजा तथा कलिंग की सीमा पर रहने वाले लोगों के प्रति कैसा व्यवहार किया जाए, इस सम्बन्ध में अशोक ने दो आदेश जारी किए। ये दो आदेश धौली और जौगढ़ नामक स्थानों पर सुरक्षित है। ये आदेश तोसली और समया के महामात्रों तथा उच्च अधिकारियों को संबोधित करते हुए लिखे गए हैं: सम्राट का आदेश है कि प्रजा के साथ पुत्रवत् व्यवहार हो, जनता को प्यार किया जाए, अकारण लोगों को दण्ड तथा यातना न दी जाए। जनता के साथ न्याय किया जाना चाहिए। सीमांत जातियों को आश्वासन दिया गया है कि उन्हें सम्राट से कोई भय नहीं करना चाहिए। उन्हें राजा के साथ व्यवहार करने से सुख ही मिलेगा, कष्ट नहीं। राजा यथाशक्ति उन्हें क्षमा करेगा, वे धम्म का पालन करें। यहाँ उन्हें सुख मिलेगा और मृत्यु के बाद स्वर्ग।

अशोक के अभिलेखों के प्राप्ति स्थलों से यह स्पष्ट हो जाता है कि उसका साम्राज्य उत्तर–पश्चिमी सीमा प्रान्त (अफगानिस्तान), दक्षिण में कर्नाटक, पश्चिम में काठियावाड़ एवं पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक फैला था।

असम में अशोककालीन साक्ष्यों के न मिलने से अनुमान लगाया जा सकता है कि यह क्षेत्र मौर्य साम्राज्य से बाहर था। पूर्व में बंगाल तक मौर्य साम्राज्य के विस्तृत होने की पुष्टि उसके महास्थान अभिलेख से होती है। यह अभिलेख ब्राह्मी लिपि में है। यहाँ महावंश के अनुसार अशोक अपने पुत्र को विदा करने के लिए ताम्रलिप्ति तक आया था। हेवनसांग को भी ताम्रलिप्ति, कर्णसुवर्ण, समतट, पूर्वी बंगाल तथा पुण्ड्वर्धन में अशोक के स्तूप देखने को मिले हैं। उड़ीसा के गंजाम से लेकर पश्चिम में सौराष्ट्र तथा महाराष्ट्र तक अशोक का शासन था। दक्षिण में येरागुड़ी, कार्नूल जिले में अशोक के शिलालेख मिले हैं। इसके अतिरिक्त उत्तरी मैसूर के चित्तलदुर्ग इलाके के तीन स्थानों– सिद्धपुर, मास्की तथा जटिंग रामेश्वर में अशोक के लघु शिलालेख मिले हैं। अशोक के शिलालेख में चोल, चेर, पाण्ड्य और केरल राज्यों को स्वतंत्र सीमावर्ती राज्य कहा गया है। अशोक के पांचवें और तेरहवें शिलालेख में कुछ जनपदों तथा जातियों का उल्लेख किया गया है, जैसे–यवन, कम्बोज, नायाक, नामापंक्ति, भोज, पेत्तानिक, आन्ध्र तथा पुलिंद। 13वें शिलालेख में आटवीं जातियों का उल्लेख किया है जो अपराध करते थे। यह आटवीं प्रदेश बुंदेलखण्ड से लेकर उड़ीसा तक फैला हुआ था। तिब्बती जनश्रुति के आधार पर कहा जाता है अशोक ने नेपाल में ललितपत्तन नामक एक नगर बसाया था। उसकी पुत्री चारुमती ने देवपत्तन नामक नगर बसाया। नेपाल की तराई से अशोक के दो अभिलेख रुन्मिनदेई एवं निग्लिवा स्तम्भ लेख प्राप्त होते हैं। रून्मिनदेई अभिलेख से मौर्य काल की स्पष्ट कर नीति की जानकारी मिलती है। रुन्मिनदेई अभिलेख से विदित होता है कि लुम्बिनी यात्रा के अवसर पर उसने वहां भूमि कर की दर 1/6 से घटाकर 1/8 कर दी। कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने भेरी घोष को त्याग कर धम्म घोष को अपनाया अशोक ने लगभग 37 वर्षों तक शासन किया और 232 ई0 पू0 में उसकी मृत्यु हो गई।

परवर्ती मौर्य शासक–अशोक के निधन के पश्चात मौर्यों का इतिहास अन्धकार में विलीन हो जाता है। अशोक के पश्चात सभी मौर्य

शासक अत्यन्त दुर्बल थे। वायु पुराण के अनुसार अशोक की मृत्यु के पश्चात उसके पुत्र कुणाल ने आठ वर्ष तक राज्य किया। इसके बाद क्रमशः बंधुपालित इन्द्रपालित, देववर्मा, शतधनुष और वृहद्रथ राजा हुए।[1] मत्स्यपुराण में अशोक के उत्तराधिकारियों की सूची इस प्रकार है–दशरथ, सम्प्रति, शतधन्वन और व्रहद्रथ।[2] विष्णु पुराण में यहसूची इस प्रकार है–सुयशस, दशरथ, संगत, शालिशूक, सामवर्मन, शतधन्वन और वृहद्रथ।[3] दिव्यावदान के अनुसार कुनाल, सम्पति, वृहस्पति वृषसेन, पुष्यधर्मन तथा पुष्यमित्र अशोक के बाद राजा हुए।[4] जैन ग्रन्थों में बताया गया है कि अशोक के बाद उसका पौत्र संप्रति जो कुणाल का पुत्र था, शासक हुआ।[5] इसमें सिर्फ दो ही नामों का उल्लेख हैं। तिब्बती इतिहासकार तारानाथ ने अशोक के बाद, कुनाल, विगता शोक तथा वीरसेन का उल्लेख किया है।[6] कल्हण की राजतरंगिणी में कहा गया कि कश्मीर में अशोक का उत्तराधिकारी जलौक राज्य करता था।[7] अशोक का एक संभावित उत्तराधिकारी उसका पुत्र तीवर था। इसका ऐतिहासिक प्रमाण है। सामग्री के अभिलेख में उसका अपनी माँ कारुवाकी के साथ उल्लेख हुआ है।[8] विभिन्न ग्रन्थों के तथ्यों में एकरूपता लाना कोई सहज कार्य नहीं है।

वायु, मत्स्य तथा विष्णु तीनों पुराण मौर्य वंश के अन्तिम दोनों शासकों के विशय में एक मत है। यह थे शतधन्वन या शतधनुष जिसने आठ वर्ष तक शासन किया और अन्तिम है वृहद्रथ। यह एक विलासी, अयोग्य तथा दुर्बल शासक था। इस प्रकार अलग–अलग साक्ष्यों में उत्तराधिकार का क्रम भिन्न–भिन्न दिया गया है। लेकिन यह स्पष्ट है कि अशोक के निधन के उपरान्त उसके वंशजो के समय में मौर्य साम्राज्य का तेजी से विघटन एवं पतन हुआ। अन्तिम मौर्य शासक वृहद्रथ को मारकर उसके सेनापति ब्राह्मण जातीय पुष्यमित्र ने मगध का राज्य हस्तागत किया।[9] वृहद्रथ की हत्या के साथ ही 185–180 ई0 पू0 में महान मौर्य वंश का अंत हो गया।[10]

सन्दर्भ –

1. थापर रोमिला, अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन, पृ0 181 तथा

पार्जिटर, डायनेस्टीज आफ द कलिएज, पृ0 29

2. पार्जिटर, पूर्वोद्धृत, पृ0 29, तथा चौधरी हेमचन्द्र राय, प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास, पृ0 257
3. थापर रोमिला, पूर्वोद्धृत, पृ0 182 तथा पार्जिटर, पूर्वोद्धृत, पृ0 34
4. दिव्यावदान, पृ0 430
5. परिशिष्टपर्वन, जैकोवी, पृ0 34—54
6. तारानाथ—हिस्ट्री आफ बुद्धिज्म, (अनु0 शीफनेर) पृ0 48 तथा शास्त्री, के0 ए0 नीलकण्ठ, नंद मौर्ययुगीन भारत, पृ0 277
7. राजतरंगिणी, (सं0) स्टाइन, पृ0 53, थापर रोमिला, पृ0 183 तथा राय चौधरी हेमचन्द्र, पृ0 257
8. ब्लाख, द इंस्क्रिप्सन्स ऑफ द अशोक, पृ0 159 तथा थापर रोमिला, पृ0 184
9. चौधरी हेमचन्द्र राय, प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास, पृ0 269
10. थापर रोमिला, पूर्वोद्धृत पृ0, 195.